पाठ - 1
नुबुवत से पहले अरब के हालात

الدرس الأول - هندي
العرب قبل البعثة

उस समय अरबों के यहां बुत परस्ती का चलन था। दीने फ़ितरत के खिलाफ़ बुत परस्ती के अपनाने की वजह से उस ज़माने को ज़मानए जाहिलियत का नाम दिया गया। वह लोग अल्लाह को छोड़ कर जिन बुतों की पूजा किया करते थे। उनमें मशहूर लात, उज़्ज़ा, मनात और हुबल हैं अलबत्ता अरबों में कुछ लोग ऐसे भी थे जो यहूदियत, नसरानियत या मजूसियत को अपना धर्म मानते थे और बहुत थोड़ी तादाद ऐसे लोगों की भी थी जो इबराहीम अलैहिस्सलाम की मिल्लत अर्थात दीने हनीफ़ के मानने वाले थे
जहां तक आर्थिक जीवन की बात है तो गांव के लोगों का आर्थिक जीवन मुकम्मल तौर पर जानवरों से हासिल होने वाली दौलत पर निर्भर था जिन्हें लोग चराया करते थे और शहर में बसने वाले लोगों का जीवन खेती बाड़ी और तिजारत पर निर्भर था। इस्लाम के आगमन के कुछ दिनों पहले तक मक्का अरब का सबसे बड़ा तिजारती शहर था और कुछ स्थान ऐसे भी थे जैसे मदीना और ताइफ़ जहां निर्माण से संबंधित तहज़ीब भी मौजूद थी अलबत्ता सामाजिक जीवन का बुरा हाल था। जुल्म व अत्याचार, क़त्ल व मारकाट हर ओर फैला हुआ था। इनमें कमज़ोरों को हक़ से महरूम रखा जाता था, बच्चियों को ज़िन्दा गाड़ दिया जाता था, असमतें रौंदी जाती थीं। ताक़तवर लोग कमज़ोरों का हक़ खा जाया करते थे। वे लोग जितनी चाहे शादियां किया करते थे। बदकारी फैली हुई थी और मामूली मामूली बातों पर क़बीलों और कभी–कभी एक ही क़बीले के लोगों के बीच जंगें छिड़ जाया करती थीं। इस्लाम के आने से पहले अरब की हालत का यह एक सरसरी जायज़ा है।

इब्ने ज़बीहैन (दो ज़बीहों का बेटा)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बुज़ुर्ग अब्दुल मुत्तलिब की अधिक औलाद और मालदारी पर क़ुरैश गर्व किया करते थे। अब्दुल मुत्तलिब ने नज़्र मानी कि यदि अल्लाह उन्हें दस लड़के प्रदान करेगा तो माबूदों की समीपता हासिल करने के लिए उनमें से एक लड़के को ज़बह कर देंगे। उन्होंने जो सोचा था वही हुआ। उनके दस लड़के पैदा हुए जिनमें एक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाप अब्दुल्लाह भी थे। अब्दुल मुत्तलिब ने जब नज़्र पूरी करनी चाही तो उन्होंने अपने बेटों के बीच क़ुर्आ अन्दाज़ी (पर्चियां डाल कर नाम निकालना) की तो उसमें अब्दुल्लाह का नाम आया। उन्होंने अब्दुल्लाह को ज़बह करना चाहा तो लोगों ने इस काम से मना कर दिया ताकि बाद में यह चीज़ सुन्नत न बन जाए।
इसके बाद अब्दुल्लाह और दस ऊंटों के बीच पर्चियां डाली गयीं तो उसमें भी अब्दुल्लाह ही का नाम निकला। फिर ऊंटों की तादाद बढ़ा दी तो उसमें भी उनका ही नाम निकला। इस प्रकार हर बार ऊंटों की तादाद बढ़ाने लगे। हर बार उसमें अब्दुल्लाह ही का नाम आता था। इस तरह करते करते ऊंटों की तादात सौ हो गयी तो इस बार ऊंट का नाम निकला तो अब्दुल मुत्तलिब ने सौ ऊंटों को ज़बह कर दिया और अपने बेटे अब्दुल्लाह की ओर से इन ऊंटों का फ़िदया दिया।
अब्दुल्लाह अब्दुल मुत्तलिब के सबसे चहेते बेटे थे। खास तौर से फ़िदया देने के बाद। जब अब्दुल्लाह बड़े हुए तो उनके बाप ने बनू ज़ोहरा की एक लड़की आमिना बिन्त वहब को चुना और आपकी उनसे शादी करा दी। आमिना का हमल ठहरा उनके तीन महीने के बाद अब्दुल्लाह तिजारती क़ाफ़िले के साथ मुल्क शाम चले गए। वापसी में बीमारी का शिकार हो गए तो उन्होंने मदीना में बनू नज्जार से तअल्लुक़ रखने वाले अपने मामूज़ाद भाई के यहां क़याम किया। इसी दौरान वहीं पर उनकी मौत हो गयी और वे दफ़न कर दिए गए।
हमल के महीने पूरे हो गए और आप पीर के दिन पैदा हुए, अलबत्ता आपकी पैदाइश के दिन और महीने की सही बात मालूम नहीं है। एक कथन है कि आप 9 रबीउल अव्वल को पैदा हुए। दूसरा कथन है कि 12 रबीउल अव्वल को पैदा हुए। तीसरा कथन यह है कि रमज़ान के महीने में पैदा हुए और इसके अलावा भी बहुत से कथन हैं। आपकी पैदाइश 571 ईसवीं में हुई, इस साल को आमुल फ़ील के नाम से भी याद किया जाता है।